International Journal of Social Science Research (IJSSR)
Volume- 2, Issue- 3 | May - June 2025 ISSN: 3048-9490

भारतीय बैंकिंग प्रणाली में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफ.डी.आई.) का प्रभाव

मंजू [1], डॉ. शरद कुमार [2]

[1] शोधार्थिनी, अर्थशास्त्र विभाग, एन. आर. ई. सी. कॉलेज, खुर्जा, बुलंदशहर

[2] एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, एन. आर. ई. सी. कॉलेज, खुर्जा, बुलंदशहर

सारांश:-

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र किसी भी देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। जिसने भारतीय बैंकिंग प्रणाली में एक बहुत ही महत्वपूर्ण मंच तैयार किया है। भारतीय बैंकिंग प्रणाली के माध्यम से विकास हो सकता है। और उस विकास से भारत की अर्थव्यवस्था में वृद्धि होगी। और अर्थव्यवस्था में धन का निर्माण भी होगा। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफ.डी.आई.) को भारतीय आर्थिक विकास का मजबूत बंधन भी कहा जाता है। भारत एक विकासशील देश है, इसलिए यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए फायदेमंद है। वैश्वीकरण के बाद भारतीय बैंकिंग में बड़े बदलाव आये हैं। यह पेपर भारतीय बैंकिंग प्रणाली के इतिहास के बारे में चर्चा करता है, भारतीय बैंकिंग प्रणाली में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की आवश्यकता है। यह पेपर यह भी मानता है कि बैंकिंग क्षेत्र में एफ.डी.आई. कुछ मुद्दों को अधिसूचित कर सकता है। जैसे नए वित्तीय और अद्वितीय उत्पादों के विकास को प्रोत्साहित करना, इससे जोखिम लेने की क्षमता में सुधार होता है। भारतीय बैंकिंग क्षेत्र, इस क्षेत्र की दक्षता में सुधार करता है और बैंकिंग क्षेत्र के वित्तीय परिवर्तनों को बेहतर ढंग से संभालता है। अध्ययन के नतीजे में भारतीय बैंकिंग प्रणाली में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफ.डी.आई.) के प्रभाव का निष्कर्ष निकाला गया है।

मुख्य शब्द- प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, भारतीय बैंकिंग, भारतीय अर्थव्यवस्था, एफ.डी.आई., बैंक

प्रस्तावना-

भारतीय बैंकिंग प्रणाली एशियाई क्षेत्र के अन्य देशों से भिन्न है। क्योंकि भारत की भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक स्थितियाँ अद्वितीय हैं। भारत क्षेत्रफल में जनसंख्या के दृष्टिकोण से विशाल देश है, जिसकी जनसंख्या लगभग 140 करोड़ है, जिसकी अपनी एक विविध संस्कृति है। भारत में आय और व्यय की असंतुलित प्रणाली है। भारतीय आबादी के एक बड़े हिस्से में उच्च स्तर की निरक्षरता है, लेकिन साथ ही, देश में प्रबंधन और प्रौद्योगिकी में बड़ी भूमिका परिवर्तक, और क्रांतिकारी प्रतिभाएं मौजूद हैं। भारत में लगभग 30 से 35 प्रतिशत आबादी मेट्रो शहरों और शहरी क्षेत्रों में रहती है। और शेष 60-65 प्रतिशत कई अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में फैली हुई है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, निवेश और बचत के बीच के अंतर को पूरा करने के लिए एक पुल का कार्य करता है। भारत में आर्थिक विकास की प्रक्रिया में, एफ.डी.आई. एक विकासात्मक साधन के रूप में श्रम साध्य है। जो अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद करने में सक्षम है। 1991 में जब नई औद्योगिक नीति घोषित की गई, तो भारत में विदेशी पूंजी के प्रवाह के लिए बड़ी मात्रा में प्रोत्साहन और रियायत की व्यवस्था की गई। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बैंकों में निवेश और बचत के बीच के अंतर को पूरा करने के लिए एक पुल का काम करता है। आर्थिक विकास की प्रक्रिया में भारत एक उभरता हुआ राष्ट्र और अर्थव्यवस्था है जिसमें उपभोक्ता और पूंजीगत वस्तुओं के लिए भी बड़ी गुंजाइश है। भारत के पास प्रचुर मात्रा में और विविध प्राकृतिक संपदा (संसाधन) है, इसकी मजबूत आर्थिक नीति, बेहतर बाजार स्थितियां और अत्यधिक कुशल मानव संसाधन इसे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए एक उचित लक्ष्य बनाते हैं। भारत की अर्थव्यवस्था नीति ढांचा समाजवादी और पूंजीवादी विशेषताओं का संयोजन है। ये सभी विशेषताएं आप भारतीय

बैंकिंग प्रणाली के आकार और संरचना में देख सकते हैं। प्रशासन, सरकारी योजना और कार्यवाही की आवश्यकता को पूरा करने के लिए इसे विभिन्न समय में विभिन्न राष्ट्रीयकरण योजनाओं के अधीन किया गया है।

भारतीय बैंकिंग प्रणाली दूसरे देशों से भिन्नता लिए हुए है। क्योंकि भारत की भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक स्थितियाँ भिन्न हैं और देश में जनसंख्या बहुत अधिक है। बड़ी संख्या में लोग बैंकिंग प्रणाली का उपयोग कर रहे हैं। वर्तमान में अर्थव्यवस्था के विकास के चरण में भारत उभरता हुआ देश है। जो कि विनम्रतापूर्वक अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने का प्रयास कर रहा है।

हाल के वर्षों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफ.डी.आई.) में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इस आर्थिक विकास की दृष्टि से भारतीय बैंकिंग प्रणाली ने वैश्विक स्तर पर एफ.डी.आई. के जरिये इसमें बढ़ोतरी की है। हालाँकि एफ.डी.आई. के प्रवाह में कमी के दो मुख्य कारण हैं:- पहला, सिद्धांत ने सेवा क्षेत्र में केवल सीमित अंतर्दृष्टि प्रदान की है, और दूसरा, सेवाओं के संबंध में डेटा समस्याएं विशेष रूप से गंभीर हैं।

उत्पादन, व्यापार और निवेश में सेवाओं के बढ़ते महत्व को देखते हुए यह दोष तेजी से परेशान करने वाला है। बैंकिंग क्षेत्र के संबंध में जानकारी की अधिक कमी देखी जा सकती है। अधिकांश अध्ययनों में देखा गया है कि विदेशी निवेश के प्रभाव की बड़ी भूमिका होती है, मेजबान देश के बैंकिंग क्षेत्र पर एफ.डी.आई. के प्रभाव पर कम ध्यान दिया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन तथा उनके अपने बैंकों की विदेशी प्रतिस्पर्धात्मकता के बारे में चिंताओं को जन्म देते हैं; और उनके प्रभावों की बाजारों में जांच की जाती है।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफ.डी.आई.) से तात्पर्य एक देश के किसी व्यक्ति या कंपनी द्वारा दूसरे देश में स्थित व्यावसायिक हितों में किए गए निवेश से है। इसमें विदेशी व्यापार पर निवेशक का काफी हद तक प्रभाव या नियंत्रण शामिल होता है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफ.डी.आई.) देशों के बीच किसी कंपनी/संगठन के नियंत्रित स्वामित्व के रूप में किया जाने वाला निवेश है। यह निवेश या तो अकार्बनिक ओर जैविक हो सकता है। अकार्बनिक, जिसमें लक्ष्य देश में एक कंपनी खरीदी जाती है, और जैविक, जिसमें लक्ष्य देश में मौजूदा कंपनी द्वारा परिचालन का विस्तार किया जाता है। यह कई तरीकों से बना है, जैसे किसी विदेशी देश में साझेदार कंपनी खोलना, किसी विदेशी-आधारित कंपनी के साथ नियंत्रित स्टॉक खरीदना, या किसी विदेशी-आधारित कंपनी के साथ विलय करना, या संयुक्त उद्यम बनाना। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का लाभ यह है कि आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) द्वारा बनाए गए नियमों के अनुसार, इसमें नियंत्रण शक्ति होती है। नियम किसी विदेशी आधारित कंपनी में दस प्रतिशत स्वामित्व को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का आधार बनाते हैं। यह आम तौर पर एक ऐसा हिस्सा है जहां पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं के बजाय प्रतिभाशाली कार्य बल या वित्तीय विशेषज्ञ के लिए अधिक सामान्य विकास की संभावनाएं पाई जा सकती हैं। इसमें समय-समय पर निवेश से परे कुछ और भी शामिल होता है। इसमें प्रबंधन की व्यवस्थाएं शामिल हो सकती हैं, और प्रौद्योगिकियों में विलय भी शामिल हो सकता है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का मुख्य घटक यह है कि यह किसी विदेशी भूमि पर विदेशी व्यापार का नियंत्रण बनाता है! यह बहुत व्यापक शब्द है; प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के विभिन्न रूपों में विलय और अधिग्रहण करना, नई सुविधाओं का निर्माण करना, इंट्रा-कंपनी ऋण और विदेशी परिचालन से अर्जित मुनाफे का पुनर्निवेश करना आदि शामिल है। किसी भी बढ़ती अर्थव्यवस्था को इस प्रकार के निवेश से अत्यधिक लाभ होता है। अत्यधिक लचीले उद्योगों के कारण बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों से निवेश आकर्षित होता है। और अपने देश का विकाश होता है।

अध्ययन के उद्देश्य-

• भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को समझना।

• भारत में बैंकिंग क्षेत्र में एफ.डी.आई. पर प्रभाव।

साहित्यिक समीक्षा-

भट्टाचार्य जिता, भट्टाचार्य मौसमी (2012), "भारत में आर्थिक विकास पर एफ.डी.आई. और माल और सेवा व्यापार का प्रभाव: एक अनुभवजन्य अध्ययन", इस अध्ययन से पता चला कि एफ.डी.आई., बैंकिंग, सेवा व्यवसाय और के बीच एक दीर्घकालिक संबंध था। भारत की आर्थिक वृद्धि, व्यापारिक व्यापार और आर्थिक विकास, सेवा व्यापार और आर्थिक विकास के बीच द्वि-दिशात्मक कार्य-कारण अनुभवात्मक है।

लैघाने.के.बी. (2007), एलपीजी (उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण) ने विदेशी बैंकों और भारतीय बैंकों पर एफ.डी.आई. मॉडल के प्रभाव को सकारात्मक रूप से प्रायोजित किया है। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि एफ.डी.आई. को गरीबी, बेरोजगारी को कम करने और प्राथमिक शिक्षा और बैंकिंग के प्राथमिकता वाले क्षेत्र को बढ़ाने के रूप में देखा जाना चाहिए। एलपीजी के कारण ही भारतीय बैंक वैश्विक स्तर पर अपना कारोबार स्थापित कर रहे हैं और कई विदेशी बैंक भारत में अपना बाजार स्थापित कर रहे हैं।

सिंह जे. (2010), "आर्थिक सुधार और विदेशी विकास- भारत में सही निवेश: नीति, रुझान और पैटर्न", प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफ.डी.आई.) को आकर्षित करने के लिए राष्ट्रों और उपराष्ट्रीय संस्थाओं के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा के संदर्भ में, वर्तमान पेपर एफ.डी.आई. प्रवाह के बढ़ते रुझान और पैटर्न का पता लगाने का प्रयास करता है। 1980 के मध्य और उसके बाद भारत सरकार द्वारा घोषित विभिन्न नीतिगत उपायों के आकर्षण बताया गया है। अनुभवात्मक विश्लेषण से पता चलता है कि एफ.डी.आई. प्रवाह, सामान्य तौर पर, सुधार के बाद की अवधि के दौरान बढ़ती प्रवृत्ति दिखाता है। इसके अलावा, देश एफ.डी.आई. प्रवाह की तुलना करने के पश्चात यह भी संकेत मिलता है, कि हाल के वर्षों में अन्य विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में भारत में एफ.डी.आई. प्रवाह काफी बढ़ गया है। इस प्रकार, अध्ययन से पता चलता है कि भारत में एफ.डी.आई. प्रवाह शुरू किए गए उदारीकरण उपायों के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया देता है।

अनुसंधान क्रिया विधि-

यह शोध पत्र केवल द्वितीयक आंकड़ों की सहायता से पूर्ण किया गया है। जानकारी एकत्र करने के लिए प्रमुख उपकरण मुख्य रूप से पत्रिकाओं, लेखों, भारतीय अर्थव्यवस्था के ऑनलाइन डेटाबेस, आरबीआई बुलेटिन, वेबसाइटों या समाचार पत्रों आदि द्वारा एकत्र किया गया हैं।

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र पर एफ.डी.आई. का प्रभाव-

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफ.डी.आई.) को आर्थिक विकास की जीवन रेखा माना जाता है। खासकर भारत जैसे विकासशील देश के लिए तो यह जीवन रेखा का कार्य ही करती है। यह न केवल पूंजी के स्रोत के रूप में देश के दीर्घकालिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, बल्कि प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण, उसके बुनियादी ढांचे को मजबूत करने, उत्पादकता को बढ़ाने और रोजगार के अवसर पैदा करने और इसके माध्यम से घरेलू अर्थव्यवस्था की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बैंकिंग क्षेत्र में एफ.डी.आई. की वृद्धि, भारत में बैंकिंग उद्योगों ने पिछले कुछ वर्षों से वित्तीय स्वास्थ्य और रोजगार की पेशकश में उल्लेखनीय प्रगति दिखाई है। वित्तीय मंदी के बावजूद बैंकिंग क्षेत्र भारत में एक अत्यधिक प्रभावशाली क्षेत्र बना हुआ है।

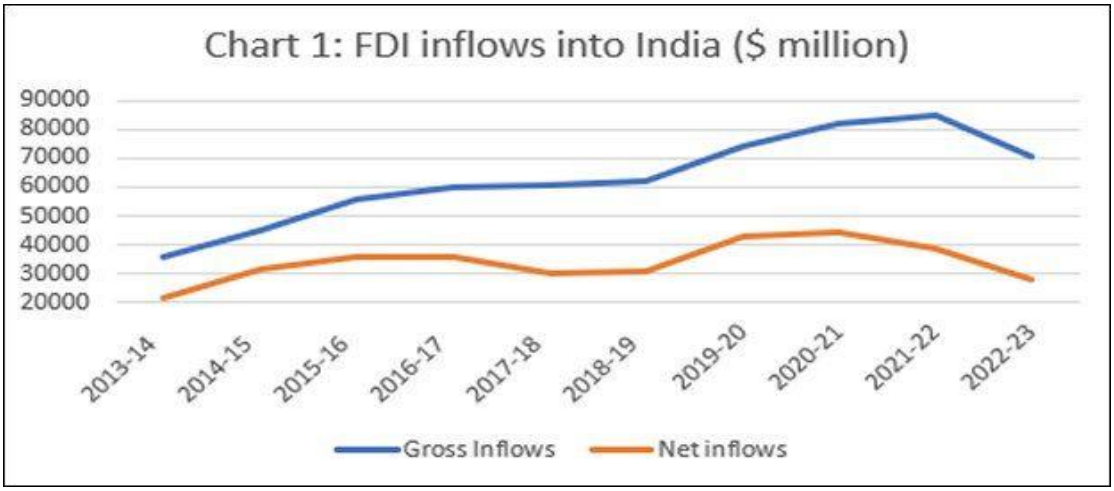

वैश्वीकरण के कारण, कई भारतीय बैंक अपने नवीन उत्पादों और मजबूत वित्तीय स्थिति के आधार पर वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश मेजबान देश की अर्थव्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। क्योंकि यह न केवल आर्थिक विकास को बढ़ाने के अवसर प्रदान करता है, बल्कि सभी संसाधनों को प्रभावी ढंग से नियोजित करके राष्ट्रीय आय को अनुकूलित करने के लिए कई दरवाजे भी खोलता है। किसी भी देश के समग्र विकास के लिए वित्तीय क्षेत्र हमेशा प्रमुख क्षेत्र होता है। और बैंकिंग क्षेत्र सभी में प्राथमिक क्षेत्र होता है। 1991 में भारत द्वारा आर्थिक सुधारों को अपनाने के बाद से भारतीय बैंकिंग ने एक लंबा सफर तय किया है।

आज, भारतीय बैंक विकसित देशों के अपने समकक्षों की तरह ही प्रौद्योगिकी के प्रेमी हैं। प्रतिस्पर्धी और सुधारवादी ताकतों के कारण ग्राहकों को बैंक द्वारा आकर्षित करने और बनाए रखने के लिए इंटरनेट, ई-बैंकिंग, एटीएम, क्रेडिट कार्ड और मोबाइल बैंकिंग का भी उदय हुआ है। इस अध्ययन का उद्देश्य प्रत्यक्ष विदेशी प्रभाव की जांच करना है।

एफ.डी.आई. के सकारात्मक प्रभाव -

बढ़ती वैश्विक प्रतिस्पर्धा के प्रभाव के कारण उत्पादों में बेहतर गुणवत्ता बढ़ी है। जिसमें उत्पादन के प्रति ग्राहक सेवा और ग्राहक ही मुख्य है। इसके दृष्टिकोण से वैश्विक शिक्षा के कारण उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। चूंकि घरेलू कंपनियों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से जूझना पड़ता है, इसलिए उन्हें बाजार में बने रहने के लिए मानकों और ग्राहक संतुष्टि के स्तर को बढ़ाने की आवश्यकता होती है। इसके अलावा जब कोई वैश्विक ब्रांड किसी नए देश में प्रवेश करता है तो वह कुछ संभावना पर सवार होकर आता है। जो कि उस संभावना पर खरा उतरता है तभी उसको बाज़ार में प्रतिस्पर्धा और 'योग्यतम स्थिति की उत्तरजीविता' के रुप में देखा जाता है।

रोजगार: एफ.डी.आई. के कारण, विकासशील देश युवाओं को वैश्विक शिक्षा देने में सक्षम हुए। और इस प्रकार बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा हुए। इसने उभरते बाजारों में निवेश करने और वहां उपलब्ध प्रतिभाओं को सामने लाने का मौका दिया है। विकासशील देशों में पूंजी की बहुत कमी है जो घरेलू कंपनियों के विकास को बाधित करती है। और इसलिए, रोजगार को भी बाधित करती है। ऐसे मामलों में, व्यवसायों की वैश्विक प्रकृति के कारण, विकासशील देशों के लोग भी लाभकारी सेवा के अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

निवेश और पूंजी प्रवाह: बहुत सी कंपनियों ने विनिर्माण इकाइयां शुरू करके ब्राजील और भारत जैसे विकासशील देशों में शिक्षा प्रणाली और व्यापार में सीधे निवेश किया है। लेकिन हमें यह भी देखने की जरूरत है कि प्रवाहित होने वाले प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफ.डी.आई.) की मात्रा कितनी है। विकासशील देशों में बहुत सारे विदेशी निवेश आकर्षित

होते हैं और इस प्रकार विदेशी मुद्रा के भंडार को आगे बढ़ाया जाता है। और ये प्रक्रिया देश के विकास में अपना सहयोग देती है।

विदेशी व्यापार: अर्थव्यवस्था पर एफ.डी.आई. के प्रभावों पर चर्चा करते समय हम आर्थिक विकास पर विदेशी व्यापार के प्रभाव को कैसे भूल सकते हैं। यह तुलनात्मक लाभ हमेशा एक पहलू रहा है, यहां तक कि पुराने काल में भी 10, यहां तक कि व्यापार की शुरुआत, शुरुआती राज्यों के समय में हुई थी, लेकिन वैश्वीकरण के कारण इसे संस्थागत बना दिया गया है। पूर्व समय में व्यक्ति जो चाहते थे उसे पाने के लिए अनुचित तरीकों का सहारा भी ले लेते थे। और राज्यों और काउंटी को ध्वस्त करना पड़ता था।

तकनीकी जानकारी का प्रसार: जबकि आमतौर पर यह माना जाता है कि सभी नवाचार पश्चिमी दुनिया में होते हैं। वैश्वीकरण और एफ.डी.आई. के प्रभाव के कारण तकनीक विकासशील देशों में भी आती है। तथा इसके बिना, नए आविष्कारों और दवाओं का ज्ञान नहीं होगा। वे उन्हीं देशों में फँसे रहेंगे जो उनके साथ आए थे और किसी और को लाभ नहीं होगा। जानकारी के प्रसार को आर्थिक और राजनीतिक ज्ञान तक भी बढ़ाया जा सकता है, जिसमें दूर-दूर तक वृद्धि हुई है। ज्ञान के प्रसार का सबसे स्पष्ट उदाहरण यह है कि पश्चिमी दुनिया आज आयुर्वेद और योग की आदतन भारतीय प्रथाओं के लाभों के बारे में जागरूक हो रही है, जबकि पश्चिमी एंटीबायोटिक्स भारतीय बाजारों में बाढ़ ला रहे हैं। और भारत में लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर रहे हैं।

सुझाव-

1. एफ.डी.आई. से संबंधित मुद्दे अगली पीढ़ी को आगे बढ़ाने के लिए पर्याप्त समृद्धि होंगे।
2. पर्याप्त एवं मजबूत नीति जो एफ.डी.आई. के पक्ष-विपक्ष सहित हर पहलू के अनुरूप तैयार की जानी चाहिए।
3. सरकार को प्रत्येक कदम के लिए पर्यवेक्षण की आवश्यकता होगी और होनी भी चाहिए। तथा उचित कार्रवाई होनी चाहिए।
4. ऐसे कानूनों या नियमों को बढ़ावा दें, जिससे भारतीय बाजार की ताकत निश्चित रूप से बढ़े।

निष्कर्ष-

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र आरबीआई और भारत सरकार के दिशानिर्देशों केसाथ कार्य कर रहा है। इसने भारतीय वित्तीय प्रणाली को बिना बाधा के अपनी मजबूत नीतियों और प्रक्रियाओं के साथ वैश्विक आर्थिक संकट के दौरान भी स्वयं को साबित किया है। बैंकिंग क्षेत्र में विकास और विविधीकरण अब पूरे विश्व में हो रहा है। पिछले दशक में, आर्थिक विकास की तेज दर और प्रगतिशील नीति उदारीकरण ने भारत को दुनिया के निवेश के लिए एक आकर्षक गंतव्य बना दिया है। संयुक्त राज्य अमेरिका दुनिया के दो सबसे बड़े लोकतंत्रों के बीच साझेदारी को मजबूत करने के लिए भारत में निवेश के मामले में अग्रणी स्थान पर रहा है। उपरोक्त शोध से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि चूंकि भारत एक विकासशील देश है और जो लोग गैर-सरकारी या संगठनों में काम कर रहे हैं। उन्हें सेवानिवृत्ति के बाद कम सामाजिक सुरक्षा मिलती है। उनमें बचत की आदतों को प्रोत्साहित करने के लिए हमारे बैंकिंग क्षेत्र विभिन्न योजनाएं शुरू कर रहे हैं। उपरोक्त सभी के अलावा, चूंकि भारतीय बैंकिंग क्षेत्र को दुनिया भर में ले जाने के लिए भारत में पूंजी जुटाने की क्षमता बहुत कम है, इसलिए हमें विदेशों से निवेश की आवश्यकता है। अंतिम लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि आरबीआई को ऐसी नीतियां बनानी चाहिए कि एफ.डी.आई. आरबीआई के नियमों को खत्म न करें और भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में इसका परिणाम बने।

सन्दर्भ ग्रंथ-सूची -

1. होराइजन", इंडियन इकोनॉमिक रिव्यू, खंड XXXXII। संख्या 2
2. सुश्री सपना हुडा, एफ.डी.आई. और भारतीय अर्थव्यवस्था का अध्ययन, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय) हरियाणा, 2011
3. भंडारी, एलएस गोकारा ए टंडन, “भारत में सुधार और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश", डीआरसी वर्किंग पेपर, 2002
4. बालासुब्रमण्यम वीएन, सैप्सफोर्ड डेविड, "क्या भारत को और अधिक एफ.डी.आई. की जरूरत है?”, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 2007
5. माजिद महमूदी और इलाहे महमूदी, “प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, निर्यात और आर्थिक विकास: विकासशील देशों के संदर्भ में”, आर्थिक अनुसंधान-एकोनोमस्का इस्ट्राजिवानजा, वॉल्यूम-1, पृ. 38-49, 2016
6. तिलक राज और आशिमा पाहवा, “भारत के आर्थिक विकास पर विदेशी निवेश का प्रभाव”, रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी, खण्ड-03, अंक-12, पृ.52-57 दिसम्बर-2018
7. https://Economicstimesofindia .com